International Journal for Multidisciplinary Research (IJFMR)
E-ISSN: 2582-2160 ● Website: www.ijfmr.com ● Email: editor@ijfmr.com

# ताई खाम्ती जनजाति का लोक साहित्य एवं विविध आयाम

**डॉ. नांग सुलिना चाउतांग**

TGT(हिंदी), ईस्ट सियांग, पासीघाट, अरुणाचल प्रदेश

**शोध सारांश**

साहित्य को समाज का दर्पण कहा जाता है| जिसके अंतर्गत समाज के हर पहलुओं का प्रतिबिम्ब दिखाई पड़ती है| लोक साहित्य जन-जन के साहित्य को कहा जाता है| यह सामान्य जनता द्वारा जनता के लिए रचा जाता है| लोक साहित्य वह साहित्य है जो समाज में मौखिक रूप में विद्यमान है| इसमें लोक भावनाओं की अभिव्यक्ति होती है| मनुष्य ने जबसे सभ्य समाज का निर्माण किया तभी से वह अपनी रीति-रिवाज, मान्यताओं आदि के अनुपालन करते समय अनेक पद्धतियों को अपनाया, जो गीत, संगीत, कथाएँ, नृत्य आदि रूप में अभिव्यक्त हुई| कालांतर में इन्हीं पद्धितियों को लोक साहित्य की संज्ञा दी गई| ताई खाम्ती भारत के पूर्वोत्तर में स्थित अरुणाचल प्रदेश के निवासी है| वर्तमान समय में अरुणाचलप्रदेश का नम्साई जिला इनके मुख्य निवास स्थान है| ताई खाम्ती जनजाति के पास अपनी लिपि है, जिसे इनके भाषा में 'लिक-ताई' कहते हैं| लिपि होने के कारण इनका साहित्य लिखित रूप में उपलब्ध है| हिंदी साहित्य की सभी विधाएं ताई खाम्ती साहित्य में मौखिक एवं लिखित रूप में उपलब्ध है|

**प्रमुख शब्द-** लोक साहित्य, ताई खाम्ती जनजाति,संस्कृति एवं सभ्यता,बौद्ध धर्म|

साहित्य को समाज का दर्पण कहा गया है| जिसमें समाज की प्रतिबिम्ब दिखाई देती है अर्थात साहित्य में समाज के सभी पहलुओं को देखा जा सकता है| साहित्य के माध्यम से मानव अपने मन के भावनाओं की अभिव्यक्ति करते हैं| लोक साहित्य एक पारिभाषिक शब्द है जो लोक तथा साहित्य से मिलकर बना है| यह एक ऐसा साहित्य है जिसकी रचना जनता-जनार्दन द्वारा की जाती है जिसमें लोक जीवन की अभिव्यक्ति होती है| इस साहित्य के रचनाकारकोई व्यक्ति विशेष न होकर बल्कि जन-जन द्वारा किया जाता है, जिसके कारण इस साहित्य को लोक साहित्य या जन साहित्य की संज्ञा दी गई है| लोक साहित्य मनुष्य के सामाजिक जीवन का प्रतिबिम्ब है| इस साहित्य के अंतर्गत मनुष्य के जीवन की प्रत्येक अवस्था, प्रत्येक वर्ग, प्रत्येक समय और प्रकृति का स्वरूप दिखाई देता है| मनुष्य साहित्य के माध्यम से अपने हृदय की भावनाओं की अभिव्यक्ति करते है, परन्तु लोक साहित्य के माध्यम से प्रत्येक जन

हृदय की भावनाओं को अभिव्यक्त करते हैं| लोक जीवन की सरलता, स्वाभाविकता, लौकिक एवं पारलौकिक अनुभूतियों की अभिव्यक्ति लोक गीतों तथा लोक कथाओं में मिलती है|

लोक साहित्य लोक जीवन का प्रतिबिम्ब होता है| उसमें साधारण जनता की आशाएं-आकांक्षाएं, विजय-पराजय, हर्ष-वेदना तथा विधि-निषेध सब कुछ समाहित होता है| लोक साहित्य में हज़ारों वर्षों की अनुभव सिद्ध घटनाएं गुंफित रहती है| इसकी रचना जीवन के प्रत्येक क्षण तथा स्थलों में स्वाभाविक रूप से होता है| लोक साहित्य वह मौखिक अभिव्यक्ति है जो भले ही किसी व्यक्ति ने गढ़ी हो पर आज जिसे सामान्य लोक-समूह अपना ही मानता है और जिसमें लोक की युग-युगीन वाणी साधना समाहित रहती है, जिसमें लोक-मानस प्रतिबिंबित रहता है| इसी कारण जिसके किसी भी शब्द में रचना-चैतन्य नहीं मिलता, जिसका प्रत्येक शब्द, प्रत्येक स्वर, प्रत्येक लय और प्रत्येक लहजा सहज ही लोक का अपना है और उसके लिए अत्यंत सहज और स्वाभाविक है|लोक साहित्य एक व्यापक शब्द है| इस शब्द को किसी एक निश्चित परिभाषा में परिभाषित करना अत्यंत कठीन कार्य है| इसके पश्चात् भी विद्वानों ने अपने अपने दृष्टिकोण से लोक साहित्य को परिभाषित करने का प्रयास किया है|

आ० हजारी प्रसाद द्विवेदी के अनुसार – 'ऐसा मान लिया जा सकता है, जो चीजें लोकचित्त से सीधे उत्पन्न होकर सर्वसाधारण को आंदोलित, चालित और प्रभावित करती है, वे ही लोक साहित्य, लोक शिल्प, लोक नाट्य, लोक कथानक आदि नामों से पुकारी जाया करती है|'

डॉ. रविन्द्र भ्रमर के अनुसार –'लोक साहित्य लोक मानस की सहज और स्वाभाविक अभिव्यक्ति है| यह बहुधा अलिखित ही रहता है और अपनी मौखिक परंपरा एक पीढ़ी से दूसरी पीढ़ी तक आगे बढ़ाता रहता है| इस साहित्य के रचयिता का नाम प्रायः अज्ञात रहता है| लोक का प्राणी जो कुछ कहता सुनता है, उसे समूह की वाणी बनाकर और समूह में घुल-मिलकर ही कहता है| संभवतः लोक साहित्य, लोक संस्कृति का वास्तविक प्रतिबिम्ब भी होता है| अभिजात, परिष्कृत या लिखित साहित्य के प्रतिकूल लोक साहित्य परिमार्जित भाषा, शास्त्रीय रचना पद्धति और व्याकरणिक नियमों से मुक्त रहता है| लोक भाषा के माध्यम से लोकचिंता की अकृत्रिम अभिव्यक्ति लोक साहित्य की सबसे बड़ी विशेषता है|'

डॉ. धीरेन्द्र वर्मा के मत के अनुसार –'वास्तव में लोक साहित्य वह मौखिक अभिव्यक्ति है जो भले ही किसी व्यक्ति ने गढ़ी हो, पर आज जिसे सामान्य लोक समूह अपना मानता है|'

ताई खाम्ती अरुणाचल प्रदेश के प्रमुख जनजातियों में से एक है| प्रदेश में इनकी अपनी सांस्कृतिक पहचान है| इस जनजाति के पास स्वयंकी भाषा एवं लिपि है जिसे इनकी भाषा में 'लिक-ताई' कहा जाता है| लिक ताई की अपनी वर्ण माला है जिसमें स्वर तथा व्यंजन दोनों वैज्ञानिक रूप में उपलब्ध है| देवनागरी स्वरों की तरह इनमें भी मात्राएँ उपलब्ध है| ताई खाम्ती जनजाति का लोक साहित्य अत्यंत समृद्ध है| हिंदी लोक साहित्य में जो-जो विधाएँ है वे सभी इनके लोक साहित्य में उपलब्ध है| ताई खाम्ती लोक साहित्य की उत्पत्ति कब हुआ? इस विषय में कोई निश्चित दस्तावेज उपलब्ध नहीं है| लोक साहित्य लोक जीवन का प्रतिबिम्ब होता है| इसके अंतर्गत साधारण जनता के जीवन से

संबंधित प्रत्येक क्षणों को समाहित किया जाता है| ताई खाम्ती लोक साहित्य में भी इनके लोक जीवन से संबंधित सभी विषयों का वर्णन किया गया है| इनके लोक साहित्य में इनके समाज के हजारों वर्षों की अनुभवसिद्ध घटनाएँ गुंफित है| लोक साहित्य के उद्भाव के विषय में विभिन्न विद्वानों ने अनेक मत प्रस्तुत किए है| इनके अनुसार लोक साहित्य का विकास मानव समाज के विकास के साथ ही हुआ है| ताई खाम्ती लोक साहित्य की उत्पत्ति भी इनके सामाजिक एवं सांस्कृतिक विकास के साथ ही हुआ है| कालांतर में जैसे-जैसे उनका सांस्कृतिक विकास होता गया वैसे ही इनका साहित्य भी समृद्ध होता गया| इनके लोक साहित्य में साधारण जनता के दैनिक जीवन से संबंधित प्रत्येक विषयों का उल्लेख किया गया है| अपने आदिम युग में घटित घटनाओं को लोक साहित्य के माध्यम से एक पीढ़ी से दूसरे पीढ़ी को संप्रेषित करते आ रहे हैं| ताई खाम्ती लोक साहित्य की अपनी अलग समृद्ध परंपरा है| 'लिक-पु-सोन-लान' नामक रचना इनके समृद्ध लोक साहित्य का प्रमाण है| इस पुस्तक में दादा अपने नाती-पोते को कहानियों के माध्यम से आचार-व्यवहार, नियम-नीति तथा आदर्श जीवन यापन की शिक्षण देते हैं|

ताई खाम्ती जनजाति के सम्पूर्ण साहित्य को उनके स्वरुप तथा लक्षण के आधार पर दो वर्गों में विभक्त किया जा सकता है| प्रथम श्रेणी के अंतर्गत उन साहित्य रचनाओं को रखा जा सकता है जो धर्म से संबंधित है| जैसे- भगवन बुद्ध के जीवन से संबंधित जातक कथाएँ, पे-तकत-सुंग-पुंग (त्रिपिटक), चाउ-ला-मांग (रामायण), थम्मा-पुक्त्रम (महाभारत), हो-थम्म (धर्म शीर्षक), लिक-पुप्पा-हो-थम्म (धर्म शीर्षक कथा), लिक-हो-थम्म-चूम, सुक-सिलाखान, सुक-महावा, सुक-पथेया, फुंग-चीन आदि| उल्लिखित ग्रंथों के अतिरिक्त ऐसे अनगिनत रचनाएँ उपलब्ध है जिसमें धर्म से संबंधित विषयों का वर्णन किया गया है| इन रचनाओं में वर्णित कथाओं के माध्यम से बौद्ध धर्म तथा उनके शिक्षण जन-सामान्य के समक्ष प्रस्तुत किया गया है|

दूसरी श्रेणी के अंतर्गत उन सभी साहित्य को रखा जा सकता है जो सामान्य विषय से संबंधित है| जैसे- इतिहास, ज्योतिष, खगोल, विधि, संस्कार, उपन्यास आदि| उल्लेखित विषयों से संबंधित रचनाएँ निम्नलिखित है- चा-तई (ताई खाम्ती जनजाति का इतिहास ग्रंथ) , पेयतांग-कानन(ज्योतिष एवं खगोल), पाप-मांगन-नेय-या(कला जादू एवं जडी बुटी से संबंधित ग्रंथ), थम्मा-सत(विधि ग्रंथ), पु-सोन-लान, सांग-वाकू, लोका-नीति, लोका-पिंगया, हितोपदेश, केम-सोन, सासाना-तोंग-पान, चाउ-ली-ची-यूँन(त्रासदी उपन्यास), या-खाम्को-माव-नोंग-योंग(रोमांस उपन्यास) आदि| इसके अतिरिक्त ऐसे बहुत सी रचनाएँ है जो मनुष्य को आदर्श जीवन व्यतीत करने के लिए मार्गदर्शित करते हैं|

ताई खाम्ती लोक साहित्य को विभिन्न वर्गों में विभाजित किया जा सकता है-ताई खाम्ती लोक गीत, ताई खाम्ती लोक कथा, ताई खाम्ती लोक नाट्य, ताई खाम्ती लोक नृत्य, ताई खाम्ती लोक सुभाषित|

ताई खाम्ती समाजमें लोक गीतों की समृद्ध परंपरा है| यहलोक गीत मनोरंजन के साथ-साथ दिशा-निर्देशन तथा अनुशासित जीवन की शिक्षा भी प्रदान करती है| इन गीतों में बौद्ध धर्म, पूर्वजों से संबंधित आख्यान, सृष्टि की उत्पत्ति विषयक कथाएँ, जनजातियों के उद्भाव और देशांतरण की कथाएं, विभिन्न परंपराओं के उत्पत्ति की कथाएं

आदि वर्णित होती है| ताई खाम्ती लोक गीतों को स्त्री-पुरुष दोनों के द्वारा गाया जाता है| परन्तु कुछ विशेष लोक गीतों को पुरुष तथा स्त्री द्वारा ही गाया जाता है| इनके लोक गीत में वाद्ययंत्र का भी प्रयोग किया जाता है| अनुष्ठानिक गीतों में वाद्ययंत्रों का प्रयोग नहीं किया जाता| ताई खाम्ती लोक गीत को उनके स्वरुप तथा चित्रण के आधार पर विभिन्न वर्गों में विभाजित किया जा सकता है-संस्कार गीत, धार्मिक गीत, अनुष्ठान गीत, श्रम गीत, खाम्म पाली|

लोक कथा की उत्पत्ति, उद्भव, विकास, विशेषताएँ आदि पर विभिन्न विद्वानों ने अपने-अपने अध्ययन के माध्यम से अपना दृष्टिकोण प्रस्तुत किया है| ताई खाम्ती समाज में भी कथा बोलने तथा सुनने की प्रथा अत्यंत प्राचीन है| इसका उदहारण 'लिक-पु-सोन-लान' नामक पुस्तक में देखा जा सकता है| जिसमें 'पु' अर्थात् 'दादाजी' अपने 'लान' यानि 'नाती-पोते' को कथा के माध्यम से जीवन से संबंधी शिक्षा देती है| ताई खाम्ती लोक कथा का उद्भाव कब हुआ यह कह पाना अत्यंत कठिन है| इनके लोक कथाओं में जीवन से संबंधित प्रत्येक विषयों का वर्णन मिलता है| बौद्ध धर्मी होने के कारण इनकी लोक कथाएँ 'जातक-कथाओं' से प्रभावित है| विषय की व्यापकता के आधार पर ताई खाम्ती लोक कथाओं को निम्नलिखित वर्गों में विभाजित किया जा सकता है - उपदेशात्मक लोक कथा, पौराणिक लोक कथा, धार्मिक लोक कथा, सामाजिक लोक कथा, मनोरंजन लोक कथा, प्रेम संबंधितलोक कथा|

नाटक को भारतीय काव्यशास्त्र के आचार्य भरत मुनि ने 'पंचम वेद' कहा है| ताई खाम्ती समाज में नाटक की समृद्ध परंपरा है| नाटक को इनके भाषा में 'पोंग' कहा जाता है| ताई खाम्ती द्वारा मनाएं जानेवाले धार्मिक उत्सवों में नाटकों का मंचन किया जाता है| इन नाटकों की पृष्ठभूमि भगवान बुद्ध से संबंधित जीवन तथा जन्म की कथा, देवी-देवताओं की कथा, इन्द्र, भिक्षु, पशु-पक्षी आदि होती है| मनोरंजन के साथ-साथ ज्ञानरंजन इन नाटकों का उद्देश्य होता है| ताई खाम्ती नाटक का उद्भाव कब कैसे और कहा हुआ यह कह पाना अत्यंत कठिन है| नाटक मंचन की परंपरा इन्हें अपने पूर्वजों से विरासत में मिली है| ताई खाम्ती लोक नाटकों में निम्नलिखित विशेषताएँ है-कथानक, भाषा, संवाद, पात्र, रंग-मंच, नृत्य तथा वाद्ययंत्र,उद्देश्य|

लोक नृत्यों में सामाजिक तथा सांस्कृतिक जीवन की झलक मिलती है| जीवन से संबंधित विविध विषयों को लोक नृत्य के माध्यम से प्रस्तुत किया जाता है| ताई खाम्ती जनजाति में नृत्य-नाटिका की समृद्ध परंपरा है| इनके भाषा में नृत्य को 'काआ' कहा जाता है| किसी भी धार्मिक व सांस्कृतिक उत्सवों पर लोक नृत्य प्रदर्शित किया जाता है| इनके समाज में प्रदेश के अन्य जनजातियों की भांति किसी अनुष्ठानों में नृत्य करने की परंपरा नहीं है| इनका लोक नृत्य किसी प्राकृतिक देवी-देवता को खुश करन न होकर केवल मनोरंजन के लिए किया जाता है| इनके समाज में कई प्रकार के नृत्य कला प्रचलित है जो निम्नलिखित है-काआ किंगनरी-किंगनरा, काआ-कोंग-तोई-कई, काआ लाई-मोकया|

ग्रामीण क्षेत्र में साधारण जनता द्वारा अपने दैनिक व्यवहार में अनेक लोकोक्तियों, मुहावरों, पहेलियों, सूक्तियों आदि का प्रयोग करते हैं| इससे इनके वाक् चतुरता का पता चलता है| इनके प्रयोग से किसी कथन में विशेषता आ

जाती है जो श्रोता पर गहरा प्रभाव पड़ता है| अतः कुशल वक्ता अपने कथन के समर्थन में लोकोक्तियों का प्रयोग किया करते हैं| ताई खाम्ती साहित्य के अंतर्गत लोकोक्तियों, मुहावरों, सूक्तियों का प्रयोग पूर्ण रूप से देखने को मिलती है| लिक-पु-सोंन-लान, थम्मासत, थम्मासत-केम-सोन, थम्मासत-केम-नांग आदि पुस्तकों में वर्णित लोकोक्तियों, मुहावरों, पहेलियों आदि के माध्यम से किसी विषय को प्रस्तुत किया जाता है|

ताई खाम्ती साहित्य की समृद्धि इनके समाज में उपलब्ध साहित्यिक रचनाओं के आधार पर देखा जा सकता है| इनके पास लिक ताई में लिखित रामायण, महाभारत तथा त्रिपिटक ग्रन्थ उपलब्धहै| रामायण को इनके भाषा में 'चाउ-लामांग', महाभारत को 'धम्मापुकतरम' तथा त्रिपिटक को 'पे-तकत-सोंगपुंग' कहते हैं| इसके अतिरिक्त ऐसे अनगिनत रचनाएंहैं जो इनके समृद्ध साहित्य को दर्शाती है| प्रत्येक ताई खाम्ती गाँव का क्योंग साहित्य का भंडार है| लिक ताई में लिखित होने के कारण इन साहित्य को ताई खाम्ती लोग ही पढ़ पाते हैं| ताई खाम्ती साहित्य का रसास्वादन वही लोग कर सकते हैं जो 'खाम ताई' भाषातथा 'लिक ताई' लिपिको बोलना और पढ़ना जानता हो| ताई खाम्ती लोकसाहित्य ताई खाम्ती समाज का दर्पण है| इनका लोकसाहित्य इनकी सामाजिक, सांस्कृतिक तथा धार्मिक समृद्धि की पहचान है| जो इन्हें प्रदेश के अन्य जनजातियों की तुलना में अधिक सभ्य होने का गर्व प्रदान करती है| इस प्रकार इनकी लोक गीत, लोक कथा, लोक गाथा, लोक नृत्य, लोक नाटक एवं लोक सुभाषित भी हिंदी तथा अन्य भाषा-भाषी की तरह प्रचलित है| इन विधाओं के माध्यम से शिक्षा, नैतिकता, जागरूकता एवं जीवन दर्शन आदि विषयों को प्रस्तुत किया जाता है|अतः ताई खाम्ती लोक साहित्य की अपनी स्वयं की भाषागत एवं संरचनागत विशेषताविद्यमान है|

**सहायक ग्रन्थ सूची -**


1. उपाध्याय कृष्णदेव, लोक संस्कृति की रुपरेखा, लोकभारती प्रकाशन इलाहाबाद|
2. द्विवेदी, डॉ. हजारी प्रसाद, जनपद, वर्ष 1, अंक 1|
3. दास, डॉ. कुज बिहारी, ए स्टडी ऑफ़ ओरिसन फोकलोर|
4. त्रिपाठी, पं. रामनरेश, आमगीत, जनपद पत्रिका, 1952|
5. वर्मा, डॉ. धीरेन्द्र, हिंदी साहित्य कोश, प्रथम भाग, ज्ञानमंडल लि०, वाराणसी|
6. गुप्त, डॉ. नर्मदा प्रसाद, चौमासा, मध्य प्रदेश आदिवासी लोककला परिषद, भोपाल की पत्रिका, अंक 41, जुलाई-अक्टूबर 1996|
7. अंसारी, डॉ. परवीन निज़ाम, लोक साहित्य के विविध आयाम, विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी, 2016|
8. डॉ. रेड्डी, आई.एन. चंद्रशेखर, आंध लोक साहित्य एवं संस्कृति|
9. उपाध्याय, डॉ.कृष्णदेव, लोक साहित्य की भूमिका|
10. उपाध्याय, डॉ.कृष्णदेव, लोक साहित्य की भूमिका|
11. उपाध्याय, डॉ.कृष्णदेव, लोक संस्कृति की रुपरेखा|

12. शर्मा, डॉ० श्री राम, लोक साहित्य: सिध्दांत तथा प्रयोग|
13. उपाध्याय, डॉ.कृष्णदेव, लोक साहित्य की भूमिका|
14. भानावत, डॉ० महेंद्र, लोक नाट्य – परंपरा और प्रवृत्तियाँ|
15. परमार, श्याम, भारतीय लोक साहित्य|
16. डॉ० नगेन्द्र, भारतीय नाट्य साहित्य|
17. उपाध्याय, डॉ.कृष्णदेव, लोक संस्कृति की रुपरेखा|
18. उपाध्याय, डॉ.कृष्णदेव, लोक संस्कृति की रुपरेखा|
19. बरुवा, टी के एम, द सिंगफ़ोज एंड देयर रिलिजन|